International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Advanced Studies of Multidisciplinary Research and Analysis – November 2023
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

# कबीर का मानवतावाद

डॉ. रूपाली चौधरी

डीन आंजनेय विश्वविद्यालय नरदहा रायपुर (छ.ग.)

मानवतावाद एक विचारधारा के रूप में आधुनिक अवधारणा है। यह स्वीकार किया जाने लगा कि सम्पूर्ण मनुष्य ही मनुष्यता का प्रतिमान है। इसके पूर्व धार्मिक विश्वासमूलक चेतना परोक्ष और दिव्य सत्ता का निषेध किया और मनुष्य को ही सभी नैतिक मूल्यों का आधार माना। मनूष्य के नैतिक सृजनशील और गरिमामय रूप को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए उन्होने अमानवीय यौमिकता का विरोध किया। मानववादियों का यह मानना था कि मनुष्य में जो पाश्विक है और हो दिव्य है, उन दोनों के मध्य में कुछ ऐसा है, जो पूर्णतः मानवीय है, और उसी के नैतिकता, कला, सौंदर्य बोध तथा अन्य आचार– विचार का प्रतिमान मानना चाहिए। मानववादी ऐसे विश्व का निर्माण करना चाहते हैं, जिसमें मनुष्य मान की समानता स्वीकृत हो, मनुष्य को ही समस्त मूल्यों का स्त्रोत और प्रतिमान माना जाये, दरिद्रता का पूर्णतः उन्मूलन हो जाये और मनुष्य दूसरों की स्वतंत्रता पर बिना किसी तरह का आघात पहुंचाये सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, बौधिक सभी स्तरों पर पूर्णतः स्वतंत्र हो।

कबीर के लिए मनुष्य इसलिए एक और समान है। सभी की उत्पति एक ही बीज से हुयी है. सभी कर्ता एक है। वे पंडितों से सीधे प्रश्न करते हैं कि जब सारे संसार की उत्पति एक ही भगवान से हुयी है, तो वे व्यर्थ ही क्या ज्ञान बघार रहे है। उनका तर्क है जब सभी में एक ही रक्त प्रवाहित होता है, सभी का मांस एक है, सारी सृष्टि की रचना एक ही बूंद से हुयी है, तो ब्राह्मण और शुद्र का भेद कैसे किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मण और शुद्र का भेद कृत्रिम है, बाहरी है, नैसर्गिक नहीं है, इसलिये व्यर्थ है। यूरोपिय मानवतावाद दिव्य सत्ता के निषेध पर आधारित है। यूरोपीय मानवतावाद में मानवमूल्यों का स्त्रोत मानव ही है। कबीर के लिये सभी मूल्यों का स्त्रोत मानव ही है। कबीर के लिए सभी मूल्यों का स्त्रोत उनका भगवान या राम है। कबीर का मानना है कि छोटा कोई नहीं है, छोटा तो वह है, जिसके मुंह में राम नहीं है। अर्थात् राम से जो अपने आप को अलग करता है कबीर के मानवतावाद को समझने के लिए भारतीय भक्ति आंदोलन की मूल चेतना को समझना आवश्यक है।

भक्ति आंदोलन ने मनुष्य और ईश्वर की दूरी को कम कर दिया था। प्रेम और भक्ति के बल पर भक्त भगवान से मिलकर एक हो गया था। भक्तों के भगवान मानवीय मूल्यों करुणा, दया, प्रेम, सहिष्णुता, शक्तिशील, सौदर्य आदि की समष्टि के रूप में स्वीकार्य थे।

कबीर ने हरिजन और हदि में उभेद माना है । वे कहते है–
पानी भया तो क्या भया, ताता सीरा होई।?
हरिजन ऐसा चाहिए, जैसा हरि ही होई।।

अर्थात् सामान्यतः हरिभक्त को जल की तरह निर्मल और द्रवणशील कल्पित किया जाता है, किन्तु कबीर की दृष्टि में भक्त का यह सच्चा आदर्श नहीं है। जल में दोष यह है कि वह तप्त भी हो जाता है और शीतल भी। यह द्वन्द्वात्मक स्थिति तक ले जाती है, जो हरि में संभव है। कबीर ने राम या हरि को इसी खरी कसौटि पर परखकर अपने आदर्श मानव की प्रतिष्ठा की थी। वे अच्छी तरह जानते थे कि इस कसौटि पर कोई भी खोटा व्यक्ति नहीं टिक सकता। इस कसौटी पर वही टिक सकता है, जो जीवन मुक्त होता है। संतो के लक्षण बताते हुये कबीर ने कहा है –

निरबैरी निहकांमता साई सेती – लेह।
विखया सौं न्यारा रहै, संतमि का अंग एह।

अर्थात् जो निष्काम हो, किसी के प्रति बैर–भाव न रखे, विषयों में जिसकी आसक्ति न हो, प्रभू के प्रति जिसकी प्रगाढ़ प्रीति हो, वही सच्चा संत होने का अधिकारी है। संत को मध्यममार्गी होनी चाहिए। गर्व नहीं करना चाहिए। दूसरों में दोष देखने से पहले अपने को देख लेना चाहिए। मनसा, वाचा, कर्मणा एक होना चाहिए। किसी को कठोर वचन नहीं कहना चाहिए। तिनके का भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए। मृदुभाषी एवं निष्कपट होना चाहिए किसी को ठगने की कोशिश नहीं करना चाहिए। मन को वश में रखना चाहिए।

संस्कृत साहित्य में प्रचलित – अहिंसा परमोधर्मः आत्मवत् सर्वभूतेषु सर्वभूतहिते रतः सत्यमेव जयते नानृत आदि – सूक्तियां भी इसी तथ्य की साक्षी है कि भारतीय संस्कृति एवं धर्म साधना का मूल स्वर मानवतावादी है। इस प्रकार मध्यकालीन संतों और भक्तों ने जिस मानवतावाद की प्रतिष्ठा की वह अपनी प्रेरणा मे दिव्य और आध्यात्मिक होते हुये भी चरितार्थता में पूर्णतः मानवीय है। इतना होने के बावजूद कबीर की मानवतावादी अवधारणा सर्वथा निर्दोष है। तर्कशील और विवेकवादी होते हुये भी वे अपने युग की सीमाओं और अंतर्विरोधों से ऊपर नहीं उठ पाये।

आदर्श मानवतावाद की पूर्ण प्रतिष्ठा मध्यकालीन सामाजिक ढांचों के भीतर संभव नहीं थी । आज की परिस्थितयों में समाजवादी समाज व्यवस्था में भी आदर्श मानवावाद की स्थापना एक संभावना ही है। मानवतावादी मनुष्य को ही सभी मूल्यों की कसौटी मानते हैं। यह मनुष्य भौतिक समृद्धि और यंत्र के सामने छोटा होता जा रहा है। मानवतावादियों की दृष्टि में मनुष्य की स्वतंत्रता सामाजिक प्रगति का प्रतिमान है। आज की विडम्बना है कि विकसित और अनंत वैभव सम्पन्न देशों में भी मनुष्य समृद्धि की नई राहें खोजने के लिए ता स्वतंत्र है, किंतु मानवीय मूल्यों के विकास के लिए नहीं आधुनिक प्रगतिशील और मार्क्सवादी विचारक नैतिक मूल्यों के विकास संबंध, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था के साथ जोड़ते हैं। उनकी दृष्टि में वर्गहीन और शोषण मुक्त समाज में मानवीय मूल्य ऊंचे होते हैं। डॉ. रामविला शर्मा का तो यहां तक कहना है कि आदिम साम्यवादी समाज की स्मृतियां महाभारत में सुरक्षित है। समाजवादी समाज–व्यवस्था के अतर्गत ही वास्तविक मानवतावाद स्थापित हो सकता है। कबीर मनुष्य को उसके सहज रूप में महत्व देते हैं। मनुष्य अपने प्रकृत रूप में न शुद्र है, न हिन्दु, न वैष्णव है, न बौद्ध, न जैन। यह सारे भेद मनुष्यकृत हैं कबीर के लिये मन को योग ही सच्चा

योग है। यदि मन पवित्र है. ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, भेद–भाव रहित है, तो फिर अलग से किसी शारीरकि व्यायाम या कर्मकांड की आवश्यकता नहीं है। योगियों के बाद वैष्णवों से कबीर का निकट संबंध माना जाता है। प्रेम ही मनुष्य को मनुष्यता की उस उच्चतम कोटि पर ले जाता है, जहां सारे भेद भाव समाप्त हो जाते हैं। ?

वस्तुतः कबीरवाणी का मूल स्वर मानवतावादी है, वे विवेक रहित और आडम्बरपूर्ण व्यवहार के विरोधी हैं। चाहे वे हिन्दुओं में प्रचलित हो, चाहे मुसलमानों में। वे मनुष्य की एकता के समर्थक है। वे अहंकार को अज्ञान का परिणाम मानते हैं। कबीरदास मनुष्य विवेक को इस सीमा तक विकसित करना चाहते हैं कि वह सभी प्रकार के अंधविश्वासों से ऊपर उठकर अभेद दृष्टि सम्पन्न हो जाये और भेदभाव की सारी बनावटी दीवारों को ढहाकर मनुष्य के रूप में अपनी पहचान कायम कर सके।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

[1] हिन्दी साहित्य कोश भाग – 1 पृष्ठ क्रमांक 105

[2] कबीर ग्रंथावली – संपादक पारसनाथ तिवारी पद – 180, पृष्ठ क्रमांक 44

[3] साखी 4 – पृष्ठ क्रमांक 206

[4] मानव अधिकारों का संघर्ष – संपादक राजकिशोर – पृष्ठ क्रमांक 44

[5] कबीर साहित्य की परख – परशुराम चतुर्वेदी – द्वितीय संस्करण 1964 ई.

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470